ॐ श्रीगोपीजन वल्लभो जयति ॐ

भूमिका

इस असार संसार सागर में डूबा हुआ मनुष्य अपने अनेक जन्मों के शुभ अशुभ कर्मों के बन्धन में बंधा हुआ जब आँख खोल कर देखता है, तो इस अथाह समुद्र से पार उतारने वाला कोई भी नज़र नहीं आता भाई बन्धु इष्ट मित्र सब जीवित काल में अपने स्वारथ के लिये इसको प्राणों से भी प्यारा कहते थे अब उनकी छाया तक दिखाई नहीं पड़ती हाय अज्ञान रूपी अंधकार से आँखें निकम्मी होरही हैं पारावार कुछ दिखाई नहीं देता काम, क्रोध, लोभ, मोह आदिक बड़े बड़े ग्राह इस के चारों तरफ़ मुंह फाड़े हुए भक्षण को तैयार हैं उधर त्रिविध तापकी पवन अत्यन्त प्रचन्ड अग्नि की ज्वाला इसके शरीर को जलाय रही है । विषय रूपी अनल की ज्वाला न्यारी सन्ताप कारी देह का दहन कर रही है एक पल भी कल नहीं पड़ने देती अहंता ममता की बेड़ी हतकड़ी हाथ पैरों में जुदी ही पड़ी हुई हैं ऐसी स्थिति में जीव बेचारा तड़प तड़प कर प्राण देना चाहता है परन्तु जितना कर्म फल भोगना शरीर को है उसके भोगे बिना इस घोर संकट से निकल ही क्योंकर सकता है ऐसी स्थित में सिवाय रोने पुकारने के और कुछ नहीं बनता, विचार करो कि उस अवसर में सहायक कौन ? वो कौनसा चतुर खेवटिया मल्लाह है, जो दया करके इस डूबते हुए जीव का उद्धार कर सकै—नहीं ! घबराओ मत वो तुम्हारे बहुत नज़दीक अत्यन्त निकट मौजूद है यदि तुम उसकी शरण होकर एक बार भी सच्चे दिल से याद करो और ग्राह से हुए गज की तरह टेर लगाओ तो उसी क्षण में नंगे पांव भागा हुआ तुम्हारे पास आकर उद्धार करने को तैयार है इतनी तुम्हारी तरफ की ही ढील है कि प्रेम करके सच्चे दिल से उसे नहीं पुकारते जब उसके आगे निश्कपट होकर अपने अपराधों की क्षमा मांगोगे तो वो दीन बन्धु कृपा सिन्धु करुणा निधि पतित पावन तुम्हारे सब अपराधों को क्षमा करके भव सागर से पार उतार देगा।

अपराध सहस्र भाजिनं , पतितं भीम महार्णवोदरे ।
अगतिं शरणागतं हरे , कृपयाकेवलमात्मसाकुरु ।

इस प्रकार विनय और प्रार्थना करोगे तो वो अवश्य अवश्य उद्धार करेहीगा इसमें कोई संदेह नहीं है उसका नाम शरणागत वत्सल है वो स्वयं आज्ञा करता है कि (सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीत्य भियाचते । अभयं सर्व भूतेभ्यो ददामी तिव्रतं ममं) अर्थात् एक बार भी जो जीव मेरी शरण होकर यह शब्द बोलता है कि (मैं तेरा हूं) उसको मैं अभय मोक्ष जरूर देता हूं यह मेरा दृढ़ व्रत है । और देखो जो पूतना राक्षसी उसे ज़हर पिला कर मारना चाहती थी उसे अपनी माता की गति दी इससे अधिक दयालुता क्या होगी तो अब ऐसे कृपालु दयालु भगवान् से हम विनय और प्रार्थना करें तो हमारे उद्धार में कब सन्देह हो सकता है ।

जीव को कर्म के फल भोगने के लिये चौरासी लाख योनियों में कभी कीड़ा कभी पशु कभी पक्षी कभी कुछ कभी कुछ अनेक जन्म लेने पड़ते हैं इस चौरासी के चक्र से भगवत् कृपा बिना कभी नहीं निकल सकता शुभ कर्म करके सुख और अशुभ का फल दुःख भोगने के लिये करोड़ों जन्म लेने पड़ते हैं उस चौरासी के बन्धन काटने के वास्ते यह विनय के चौरासी पद हैं। एक एक पद ही यदि सच्चे दिलसे प्रेम पूर्वक गाया जावे तो चौरासी लाख योनियों के निकास के लिये काफ़ी हैं प्रत्येक पद से एक एक लक्ष्य योनि क बन्धन कटना क्या कठिन है।

श्रीमथुरेश विनय सुधाकर इसका नाम इस अभिप्राय से है कि इस विनय रूपी सुधा नाम अमृत के पान से जीव अमर होजाता है और उस सुधा की आकर यानी खान यह भजन हैं अथवा सुधाकर नाम चन्द्रमा का है इस भगवत् विनय रूपी चन्द्रमा के उदय होते ही सर्व पापों का मूल जो अविद्या अन्धकार है वो निवृत्त हो जाता है।

प्राचीन महात्माओं की वाणी में जो आशय है वोही इन पदों में रक्खा गया है केवल गाने का तर्ज़ आज कल की रुचि के अनुसार भिन्न भिन्न है शब्द वोही हैं अर्थ वोही है इस तुच्छ मंदमति का इसमें कुछ भी कर्तव्य नहीं है। रसिक भक्त जनों से प्रार्थना है कि इन पदों में जो कुछ त्रुटि अशुद्धि होय उसे दया भाव दृष्टि से शोधन करके दास के अपराध को क्षमा करें।

निवेदकः—

श्रीमथुरेश चरण शरण,

मथुराप्रसाद।

सूचीपत्र ।

॥ श्री ॥

श्री गोपीजन वल्लभो जयति

संस्कृत (पद) लावनी की चाल पर

(१) गिरिधर मम पूरय पूरय तामभिलाषाम् ।
निज दर्शनस्यखलु श्रुत्वाऽप्यमधुरभाषाम् ॥
जाने क्षन्तव्यं नास्ति मदीयं कृत्यम् ।
करुणया तथाऽप्युद्धरासि पतन्तं भृत्यम् ॥
मयि कदा भविष्यति कृपाकटाक्ष निपातः ।
प्रार्थनयाऽनयाहि समय स्त्वधिको जातः ॥
त्वत्समोन कश्चन पूरयितास्ति जनाशाम् ॥गिरि०॥
तव चरणकमलमकरन्द समीहा चित्ते ।
मधुपस्य ममास्ति प्रभो नलौकिक वित्ते ॥
मथुरेश छविस्ते सदा वसतु ममध्याने ।
तत उत्कृष्टं नहिं किञ्चिदिहाऽहंजाने ॥
अच्युत तव याचे वाचं हित प्रकाशाम् ॥गिरि०॥

संस्कृत (पद)

(२) कुरुगिरिधरराधावर सुन्दर हृदिमेसततनिवासम् ।
कामं जेतुं श्रम मपनेतुं याचे सरस विलासम् ॥कुरु०॥

अतिवनितयार्त्तयात्वयि रतयातयाविहरसानन्दः ।
चितवृत्तिसखिजन संसेवितपद सरोज मकरन्दः ॥
गोकुल समंकलयममहृदयं केलिकलाविन्यासम् ॥कु०॥
प्राणसमीरा गोगणतीरा विषय स्फुरण सुनीरा ।
यमुना बहित सुषुम्ना यत्र धारा नाति गभीरा ॥
वंशीबट मिहबहुदल कमलं मत्वा कुरुवररासम् ॥कु०॥
मोह विकारं मायागारं वत संसारं मन्ये ।
सकल मसारं याति सपारं संसक्तस्त्वयिधन्ये ॥
दृढ विश्वासं बिना प्रयासंतारय मथुरा दासम् ॥कु०॥

संस्कृत (पद) राग (गारा)

(३) सुन्दर छबि रद्भुत कवि राधिका वरः ।
श्रुतिमण्डन भव खण्डन श्याम सुन्दरः ॥सुंदर०॥ १ ॥
दीन बंधु कृपा सिन्धु कीर्ति विस्तरः ।
कमल नयन चारुवदन चित्त तस्करः ॥
यमुना तट गोपिकासु केलि तत्परः ।
गिरिधर वर चतुर कामिनी मनोहरः ॥
ज्ञानी, ध्यानी, मानी, गुणधामा, अभिरामा, बहुनामा,
बुद्धि, मन्दिरः ॥ सुन्दर० ॥ २ ॥
द्रुपद सुता दुःशासन चीर कर्षिता ।
अविलम्बित भव दूर तोपि रक्षिता ॥

गज रक्षण हेतु नाथ यात्वरा कृता, ।
मत्समये किमिति श्रीमताऽति विस्मृता ॥
त्राहि, त्राहि, पाहि, मथुरेश, शुभवेषाः करुणेशः नौमि सादरः ॥ सुन्दर० ॥ ३ ॥

संस्कृत (पद) रेखता

(४) अहो गोपाल नष्टंकिं कृपालुत्वं तव स्वामिन् ।
यदित्वं धारयस्यैतद्दयालुर्मयि भव स्वामिन् ॥
अहल्या प्रस्थरी भूता पद स्पृष्टाऽभवत्पूता ।
जडा विद्यामयिस्यूताततो मामप्यवस्वामिन् ॥अ०॥
सती या द्रौपदी दीनाऽभवद् दुःशासनाधीना ।
द्रुतंतस्या विपत्क्षीणा तथा मामप्यव स्वामिन् ॥अ०॥
मनस्त्वत्पादसंलग्नं मदीयं स्याद्यथा मग्नम् ।
तथा मथुरेश हृद्भग्नं भृशं मामप्यवस्वामिन् ॥अ०॥

संस्कृत (पद) प्रभाती ।

(५) जयति जयति तृभुवन पतिरमित तापहारी ।
शरणागत प्रणतारत संतत हितकारी ॥जयति०॥१॥
मदन दमन शोभानतनु बृन्दाबन चारी ।
मधुराधर मुरलीधर नटवर गिरिधारी ॥जयति०॥२॥

सुखद जलद श्यामवर्ण पीत वसनधारी ।
अमल कमल लोचन दल सकल मनोहारी ॥जयति०॥३॥
हरित जगति संसृति रुजमतिक खणाकारी ।
प्रीति विवश रतुलितवल विक्रमावतारी ॥जयति०॥४॥
निगमागम वर्णितयश आश्रिताघ हारी ।
मथुरापति रविदित गीत घट घट संचारी ॥जयति०॥५॥

(नाथ कैसे गज को फन्द छुडायो)
इसके वज़न पर

(६) जगत पति विपत निवारौ मेरी ।
मैं हूं शरणा गत प्रभु तेरी ॥ज०॥
भवसागर बिच नाव पुराणी परे भई बहु देरी ।
खेवटिया तुमबिन कोऊ नाहीं चहुंदिस ग्राहन घेरी ॥ज०॥१
ध्रू प्रहलाद विभीषण की तुम आपत तुरत निवेरी ।
गजके काज गरुड़तजधाये अब क्यों करतअबेरी ॥ज०॥२
भक्तिकिये तुमतारी अहल्या भीलिनसीनिज चेरी ।
जोबिनभक्ति तारिहो हमको कीरत होय घनेरी ॥ ज०॥ ३
अजामेल पापीकी काटी जन्म मरणकी बेरी ।
हमसो अधम ढूंढे नहीं पैहों पाछितैहो किये देरी ॥जं०॥४
मन मतंग मस्त बश नाहीं चंचल बुद्धि बछेरी ।
कठिनमंजिल मथुरेश पियाकी छाई रैन अंधेरी ॥ज०॥५

(गीत)

(७) सुनले बिन्ती कन्हैया हमारीरे ॥ सुनले० ॥
तेरे भरोसे मस्त रहे अपने हालमें ।
तन मन फँसाये बैठे हैं दुनियां के जालमें ॥
देते नहीं निजातहो अब किस ख़्यालमें ।
यहां काम है तमाम इसी कीलो कालमें ॥
काटो फांस वल भैया हमारीरे ॥ सुनले० १
बांकी अदा पै आपके कुर्बान सब जहान ।
जादू निगाह हुस्न में हो ताक बेगुमान ॥
निर्गुन कहासो झूठहै तुमसब गुणोंकी खान ।
बेरहम क्यों बनो हो कहांके दया निधान ॥
जल्दी कीजे सहैया हमारीरे ॥ सुनले० ॥ २
मथुरेश तेरी माया का दरिया अपारहै ।
तारी किये जिहलमें न सूझा किनारहै ॥
किश्ती में बेशुमार अज़ाबों का बारहै ॥
मल्लाह तुम बनौ तो अभी बेड़ा पारहै ॥
बही जाती है नैया हमारीरे ॥ सुनले० ॥ ३

(ग़ज़ल)

(८) इधरभी हो नज़र अबतौ कँवर नंदलाल थोड़ीसी ।

वहुत वीती फुजूली में है वाक़ी हाल थोड़ीसी ॥
मनोहर प्रेम सरसानी मधुर वो रस भरी वानी ।
सुनादो प्यारे दिल जानी अजी गोपाल थोड़ीसी ॥
मिटै दिलकी कदूरत तव कि पाऊं देख सूरत जव ।
ज़रूरत आपकी किरपा की है किरपाल थोडीसी ॥
हमारी वार तौ फुरसत न होने का वहाना है ।
वहुत सुन्ते हो दिलसे जो कहैं व्रजवाल थोडीसी ॥
करोगे गर न निस्तारा हमारा जल्द तर मथुरेश ।
हंसी होगी जगत में आपकी रछपाल थोडीसी ॥

(ग़ज़ल)

(९) सुनादो श्याम वंसी की मनोहर तान थोडीसी ।
वहुत है दक्षिणा हमको यही जिजमान थोडीसी ॥
वो धनहै जनकि जिनसे तुम हो हँसते वोलते साहव ।
है काफी हमको तो इक आपकी मुसकान थोडीसी ॥
न तप से हाथ आतेहो न जप से मन समातेहो ।
ग़नीमत है कि खोली इश्क़ की दुकान थोडीसी ॥
जो देते प्रेम हो दिल लेके मामूली ये सौदा है ।
कहीं पर तो निभाया कीजिये पहिचान थोडीसी ॥
न भूलो अपनी आदत को ख़तायें देखकर मेरी ।
कभी तो याद कर लीजे दया की वान थोडीसी ॥

ठमकना कीजिये मथुरेश बनकर जाके मथुरामें।
तुमर दीजे वो माखन चोरियों की शान थोड़ीसी॥

(ठुमरी) मोरी सुनो श्याम (इसके वज़न पर)

(१०) नैया बहीजात तारदे मोहनवा नहीं कोई साथी मैया न भैया॥ नैया०॥ मैंतो नाहिं कीनो तेरो भजनवा, आयो सरन चीन, दीनको रखैया॥ नैया०॥ तोहीं को है लाज दुःख दलनवा, मथुरा कहत तूही टककी निभैया॥ नैया०॥

(ग़ज़ल)

(११) नाहक किया करो न बहाना कभी कभी।
मुश्किल है ख्याली दिलमें भी आना कभी२॥ १
बन ठन गऊ चराने को बन जाते वक्त ही।
मोहन हमारे कूंचे से जाना कभी कभी॥ २
जिस तन को देखकर हुआ कुरबान हर बशर।
सुन्दर बदन वो हँसके दिखाना कभी कभी॥ ३
किरपा निधान कान मेरे हाले ज़ार को।
सुन कर ज़रा तो आंसू बहाना कभी कभी॥ ४
दिल भर के गोपियों को पिलाया अधरकारस।

हम जैसों की भी प्यास बुझाना कभी कभी ॥ ५
दीनों से है किनारा हसीनों से प्यार है ।
शरमाओ कुछ तो सुनके ये ताना कभी कभी ॥ ६
मुरदे जो हैं फ़िराक़ के जीवेंगे वस्ल से ।
ऐसा सवाव भी तो कमाना कभी कभी ॥ ७
दिलकी सिपर सुधार के तैयार हम खडे ।
तीरे निगाह यार चलाना कभी कभी ॥ ८
मथुरा में जाके होगये मग़रूर बे वफा ।
कुछ तो पुरानी प्रीत निभाना कभी कभी ॥ ९

(पद)

(बेनी माधौ की बारह मासी की लय पर)

(१२) सोभाधाम श्याम वनवारी हैं बलिहारी शरण तिहारी ।
आपही को प्रभुलाज हमारी भक्तकाज करुणा अवतारी ॥
१ दीजै नटवर सुन्दर झांकी अतिही मनोहर अजब अदांकी ।
वांकी हूं निधि परमदयाकी कोट मदनजा ऊपरवारी ॥ सो० ॥
२ नानाजन्म कर्म के बन्धन फँस्यो मोहमाया के फन्दन ।
कोतुमबिन प्यारेनंदनंदन भन्जनकरे बिपतग्रहभारी ॥ सो० ॥
३ विमुख रह्यो प्रभुके सुमिरन सें अधिक कुभागी को योजनसे ।
लेहुलगाय नाथचरणन सेयदपि श्याम हौं निपट अनारी॥ सो०॥
४ विरह ताप अबसह्यो नजावें तंडपर जियरा अकुलावे ॥

खानपान कछु नाहिं सुहावै देहुदरस दीनन हितकारी ।।सो।।
५ पतितजान जिन मोहि बिसारो नाथ आपनी ओर निहारो ।
निठुराई जिन मनमें धारो मत हारो हिम्मत गिरधारी ।।सो।।
६ श्रीमथुरेश राधिका रानी सुनिये करुणानिधि मम बानी ।
आलस किये होय अतिहानी घटिहै लोकविदितदातारी ।।सो।।

(पद)

(अबतो लाज तोरे हाथ राख शरम सैयां)
इसके वज़न पर ।

(१३) नव किशोर चित्त चोर मोर मुकट वारे ।
दीनन दुख हरण हार भक्तन सुख करण हारे ॥
जुग जुग अवतरण हार करुणा वपुधारे ।।नव०।।१
सुनिये प्रभु विन्ती मोर महिमा जग विदित तोर ।
पापिन सिर मोर आयो मैं तिहारे द्वारे ।।नव०।।२
मांगूं नहिं राज पाट चाहूं न कछु सुख के ठाठ ।
आपकी हि जोऊं बाट देहु दरस प्यारे ।।नव०।।३
अबतो लाज तुम्हारे हाथ टारे नहिं बनि है नाथ ।
मोसे कोटिन अनाथ आपही उबारे ।।नव०।।४
चाहै सो दंड दीजे दासहि अपनाय लीजे ।
अब न स्वामी विलम कीजे मथुरा रखवारे ।।नव०।।५

(पद)

(आओजी आओ मेरे धीर के बंधाने वाले)
इसके वज़न पर

(१४) अब तो गोविन्दा प्यारे आपही को लज्जा मोरी ।
निपट मैं बारी भोरी, सभन की आसा छोरी ॥
शरण पिया आई तोरी, वेग खींचो अब डोरी ।
हिये में बिराजै मोरे आपकीये सुन्दर जोरी ॥अबतो०॥
चन्द सूरज सारे तारों में प्रकाश तेरा ।
मुनियों के मन मांहि प्यारे है उजास तेरा ॥
प्राणी प्राणी में ज़ानी व्यापक है हुलास तेरा ।
तेराही बल केवल मोको है विश्वास तेरा ॥
अजी नंद नन्दन प्यारे, मैं हा हा खाऊं तुम्हारे, ।
विपत तुम बिन को टारे, तुम्ही भक्तन रखवारे ॥
पाप विमोचन, भव भय मोचन, मनहर लोचन, हरिजन रोचन, झांकिये प्रभु मथुरा ओरी ॥ अबतो० ॥

(पद)

(१५) विनय सुन लीजे कृपा निधान ।
मैं दुखिया जन तुम दुखभंजन नीको भयो मिलान ॥
॥ विनय सुन लीजै० ॥

(अं०) पूरण काम धाम करुणा के श्री प्रभु श्यामा श्याम ।
दीन बन्धु तुम दोउ कहावत कोउ न आप समान ॥
॥ विनय सुन लीजै० ॥
विषयन में अनुरक्ति हमारी होत विरक्ति नाहिं ।
भक्ति भीक हों तुमसे मांगूं शक्ति दान की जान ॥
॥ विनय सुन लीजै० ॥
प्रीत किये तें प्रीतम रीझै यह सब जग की रीत ।
उपजै प्रीत कृपा विन कैसे कठिन बनी यह आन ॥
॥ विनय सुन लीजै० ॥
मैं तुमरो हूं एक बार जो मुखतें लेत उचार ।
ताहि तुरत प्रभु अभयदेततुम अस दयालको आन ॥
॥ विनय सुन लीजै० ॥
औगुन मेरे हैं अनन्त प्रभु तुम अनन्त गुण खान ।
तम दुरंतको अन्त तुरन्त हि होत उदितभये भान ॥
॥ विनय सुन लीजै० ॥
मथुरा शरण तिहारी लीनी कीनी बहुत पुकार ।
झांकी युगल देहु रङ्गभीनी दीजै येही दान ॥
॥ विनय सुन लीजै४ ॥

(ग़ज़ल)

(१६) युगलवर मेरी भी अरज़ी सुनो अबतो दया करके ।

चढ़ाओ हुक्म जो मरज़ी निरख मुझको नज़र भरके ॥१
मैं लाखों रूप धर आया नहीं इनआम कुछ पाया ।
छुड़ादो स्वांग भरना या कि रखलो पास दुख हरके ॥२
दयाकी खान हो सन्मान से सुनते हो सबही की ।
मैं हूं हैरान अब क्यों बैठे उंगली कान में धरके ॥३
पतित जो मैं तो तुम भी तो पतित पावन कहाते हो ।
नहो हिम्मत तो तज दो आप भी निज नामको डरके ॥४
सुनो श्री स्वामिनी स्वामी जो होगी मेरी नाकामी ।
करूंगा कुछ तो बदनामी तुम्हारे द्वार पर मरके ॥५
सजीली सांवरी गोरी रंगीली यह जुगल जोड़ी ।
लगन इसमें रहै मोरी कहै मथुरा चरन पड़के ॥६

(ग़ज़ल)

(१७) युगलबिहारी विनय हमारी सुनो ज़रा अबतो प्राणप्यारे ।
बढैगी महिमा तुम्हारी भारी जगत में मुझसे अधम को तारे ॥
तुम्हारे चरणोंकी आस मुझको फ़क़तहै दर्शनकी प्यास मुझको ।
करो न हरगिज़ उदास मुझको कहाते हो दुख मिटाने हारे ॥
कोई विषय मुक्ति मांगता है कोई चतुर मुक्ति मांगता है ।
न आती है मुझको जुक्ति कोई लिया तुम्हारा ही आसरारे ॥
शरण तुम्हारे चरणका जो जन उसे रहा जगसे क्या प्रयोजन ।
अखन्ड रसका हुआ वो भाजन गया जो सज्जन तुम्हारे द्वारे ॥

लगनलगी अब मगन है तनमन, करूं सदा आपही का चिंतन।
भला बुरा जैसा कुछ है यह जन, तुम्हारे क़दमों में आ गिरारे ॥
करम करो या नकुछ भी कीजे, मरम की है बात ध्यान दीजे।
शरम है तुमही को जान लीजे, नहीं है टलने की यह बलारे ॥
अहोजी मथुरेश राधे रानी, हुई है क्या मुझसे तुमको ग्लानी।
करो वहुत जल्द मेहरवानी, ये दीन जन कब तलक पुकारे ॥

(श्री जगन्नाथ स्वामी से विनय)

(लावणी)

(१८) जग दीश नवाऊं सीस में चेरो तेरो।
करो नाथ वेग बख़शीस पार होय बेड़ो ॥
कैसोहु पतित कोई जीव अधम कहिलावै।
जोआवै तुम्हरे धाम परम सुख पावै।
सब पापन को क्षय होय शुद्ध होजावै।
अस सुजस आपको नाथ सकल जग गावै।
यही चीन में दीन मलीन द्वार तेरो हेरो ॥ जग० ॥
तुम भक्त जनन की सदा करो मन भाई।
है दास मलूक प्रसिद्ध वो कर्मा बाई।
यह बात बड़ी नहीं तात जो कीरत पाई।
दिये तार अनेक अभक्त ये अतुल बड़ाई।
मो भक्ति हीन को करिहै कौन निबेरो ॥ जग० ॥

कलि काल महा विकराल व्याल मम भासै ।
उत भवसागर जञ्जाल है धीरज नासै ।
अति काम, क्रोध, मद, मोह, ये बुद्धि विनासै ।
को काट सकै अति घोर दुःख की फांसै ।
श्रीमथुरा पति भव फन्द काटिये मेरो ॥ जग ॥

(पद)

(१२) लेहु सुध मोरी धाय प्रभुजी लेहु सुधि मोरी धाय ।
दरस बिन छिन छिन कठिन दिन रैन चैन नसाय ॥
॥ प्रभुजी लेहु सुध मोरी० ॥
(१) पतित पावन भनके भावन नाथ आप कहाय ।
अति अधर्म कुकर्म मेरे लख गये घबराय ॥
॥ प्रभुजी लेहु सुध मोरी ॥
(२) विरहि जन को तन जरावत निपट सुध विसराय ।
दयावान कहात केहि विध दयावान विहाय ॥
॥ प्रभुजी लेहु सुध मोरी ॥
(३) एक ओर अनन्त अवगुण मोरे तुला धराय ।
दूजी ओर क्षमादि सद् गुण अपने धर करो न्याय ॥
॥ प्रभुजी लेहु सुध मोरी ॥
(४) मोरी जो कछु दशा है प्रभु तोरी जाने बलाय ।
सोच है जन ताप मोचन तुमरो विरद लजाय ॥

॥ प्रभुजी लेहु सुध मोरी ॥

(५) नवल श्री मथुरेश राधे युगल करिये सहाय ।
हाय हाय पुकार सुन मेरी दरस प्यास बुझाय ॥
॥ प्रभुजी लेहु सुध मोरी ॥

(ग़ज़ल)

(२३) अबतो सुधले मेरी बंसी के बजाने वारे ।
कब बनैगी भला अब मुझको बिसारे प्यारे ॥अब०॥
दीन बंधू है तेरा नाम जहां में रौशन ।
दीन मुझसा न कहीं बन्धु नहीं तुझ सारे ॥अब०॥१
द्रोपदी की भी तो फ़रियाद सुनीथी तूने ।
गज की ख़ातिर तुही दौड़ाथा पियादा पारे ॥अब०॥२
जान जाती है बिरह ताप सही ना जाती ।
आप सोचें कि है बचने को सहारा क्यारे ॥अब०॥३
दिन को इक छिन भी नहीं चैन कठिन है जीवन ।
कब तलक रात में काटूं अरे गिन गिन तारे ॥अब०॥४
क्लेश भक्तों को नहीं देते दयालू मथुरेश ।
देश भर में तेरी कृपा की सुनी चरचा रे ॥अब०॥५

(पद)

(उमरावजी सिरदारजी की लय पर)

(२१) नंदलाल प्यारे बंसीवारे कीजै बेड़ा पार ।

नंदलालजी हो घनश्याम ॥

शरणा गत प्रतिपाल हो आपहिं दीन दयाल ।
निस्तारत भव जालसे भक्तहि करत निहाल ।
किरपाल काहे निठुराई तुम ठानी मेरी वार ।
नंदलालजी हो घनश्याम ॥ १ ॥

विरह सतावत दास को वाढी दर्शन प्यास ।
आस न राखूं और की रखिये चरणन पास ।
छबिरास भिक्षा दीजे करुणा कीजे जी दातार ।
नंदलालजी हो घनश्याम ॥ २ ॥

अधमन को सिरमौर हूं पाय सकत कहां ठौर ।
पौर आपकी ताक के त्यागी सगरी दौर ।
कर ग़ौर मेरे औगुन हेरे ना बनि है निर्धार ।
नंदलालजी हो घनश्याम ॥ ३ ॥

सब बिध पूरण काम हो मैं सब भांत निकाम ।
दया धाम शुभ नाम तुम मैं अति कठिन कुनाम ।
घनश्याम मोकों तार प्यारे कीरत वड़े तिहार ।
नंदलालजी हो घनश्याम ॥ ४ ॥

बांकी झांकी सोहनी मनहर सुन्दर भेष ।
बसो सदा मेरे हिये सेवहुं चरण हमेश ।
मथुरेश किरपा कीजे दर्शन दीजे परम उदार ।
नंदलालजी हो घनश्याम ॥ ५ ॥

(पद)

(२२) धन्य धन दीनन हितकारी ॥
जन मन रंजन सब दुख भंजन जय भव भयहारी ॥
धन्य धन दीनन हितकारी ॥
मेटन हारो तृविध ताप का धन्य आपको नाम ।
अधम पतित को तारो दीन दया धारी ॥
धन्य धन दीनन हितकारी ॥ १ ॥
काहु भावसे लियो जाय तव नाम है अमित प्रभाव ।
तारण तरण सु नाम को अति मङ्गल कारी ॥
धन्य धन दीनन हितकारी ॥ २ ॥
जय जग वन्दन दुःख निकन्दन अघ भञ्जन अभिराम ।
सोभाधाम श्याम जन रञ्जन झांकी अति प्यारी ॥
धन्य धन दीनन हितकारी ॥ ३ ॥
रहै सदा अनुराग चरण में प्रभु मूरत मन में ।
श्रीमथुरेश सुछवी दृगन से कबहु न होय न्यारी ॥
धन्य धन दीनन हितकारी ॥ ४ ॥

(पद)

(गूंगे की चाल में विनय)

(२३) सांवरिया तोरी शरण गहीरे हां हां ।

प्रचन्ड कर्म पवन नै भँवर में पटकी है ।
अनङ्ग आदि महा ग्राहों ने भी झटकी है ।
अंधेरा रैन में कुछभी ख़बर न तटकी है ।
कोई दीखै न खेवन हार ॥ प्रभू० ॥

३—न इष्ट मित्र है कोई सहाय करने जोग ।
कपट की प्रीत है स्वारथ के मीत हैं सब लोग ।
मिटै तृताप जो होजाय आपका संजोग ।
दया करोजी हरो नाथ यह महा भव रोग ।
जन मथुरा है शरण तिहार ॥ प्रभु० ॥

(पद)

(२६) श्याम नेहा लगाय ना विसारियौरे ॥
अभी तो कहते हो प्यारी मैं तुझ पै मरता हूं ।
मैं आशिक़ों में तेरे इश्क़ का दम भरता हूं ।
कभी न तेरे सिवा और को सुमरता हूं ।
तेरे जोवन पै ही तन मन निसार करता हूं ।
फँसा के जाल में मुझ को न कभी टारियौरे ।
श्याम नेहा लगाय० ॥

तुम्हारी आन पै कुर्बान मेरा तन मन है ।
रसीले मन्द हसन पर फ़िदा ये जीवन है ।
ग़ज़ब की जादू भरी प्यारी प्यारी चितवन है ।

मैं हा हा खाऊं निठुरता न कभी धारियौरे ।

श्याम नेहा लगाय० ॥

मधुर मधुर जो कभी बन्सुरी बजाते हौ ।
तमाम दुनिया को वस जाल में फंसाते हौ ॥
मटक के मजनू बना चटही सटक जाते हौ ।
ध्यान में योगियों के भी कठिन से आते हौ ॥
हम को धोके में न मथुरेश कभी मारियौरे ।

श्याम नेहा लगाय० ॥

विनय का पद **(पद)** राग भक्त

(२७) बिहारी सुनलो बात हमारी अब तो कछू न वसातजी

बिहारी सुनलो बात० ॥

१–तुमतो हौ तृभुवन पति स्वामी जस है जग विख्यात जी ।
तरसाओ जिन अब या जन को आयु है बीती जातजी ॥

बिहारी सुनलो बात० ॥

२–सुन सुन तुम्हरी सुन्दरताई दरस को जिय अकुलातजी ।
रस भरी चितवन हसन मनोहर अनुपम छवि धर गातजी ॥

बिहारी सुनलो बात० ॥

३–करुणा सागर सब गुण आगर कृपा निधान कहात जी ।
जन मन रञ्जन भव दुख भञ्जन सुख दाई सब भांतजी ॥

बिहारी सुनलो बात० ॥

४–जो कोई शरण आपकी आवै परमानन्द छकातजी।
मथुरादास आस दृढ राखै चरण कमल बल जातजी ॥
बिहारी सुनलो बात० ॥

(राग विहाग)

(२८) विनय करूं केह भांत—नाथ तोरी विनय० ।
पार न पावत शेष शारदा चार वेद सकुचात ॥
॥ नाथ तोरी विनय० ॥

१–घट घट व्यापी सब जीवन की मन की जानत बात ।
प्रभु सन्मुख निज दुख यह प्राणी मुख तैं कहत लजात ॥
॥ नाथ तोरी विनय० ॥

२–सांचो हितू जीव को तुमसो दूजो नाहिं लखात ।
चूक निरन्तर देखत तोहूं पालत पोषत तात ॥
॥ नाथ तोरी विनय० ॥

३–विपत बिडारन पतित के पावन नाथ जगत विख्यात ।
करुणा निध तुम सब विध लायक सुखदायक भव त्रात ॥
॥ नाथ तोरी विनय० ॥

४–मैं अति दीन मलीन हीन मति अघ विलीन दिन रात ।
हूं कुपुत्र पर फिरूं निचीतो तुम कृपालु पितु मात ॥
॥ नाथ तोरी विनय० ॥

५–प्रेम बढ़े प्रभु चरणन मांही मन याको ललचात ।

पूरण काम नाम करौ सांचौ सुजस लोक विख्यात ॥

॥ नाथ तोरी विनय० ॥

६–चरण शरण तुम्हरी जो आवै पावै सब कुशलात।
मथुरा नाथ हाथ सिर धरकै देहु अभय बल भ्रात ॥

॥ नाथ तोरी विनय० ॥

(श्यामा श्याम श्यामा श्याम ॥ इसके वजन पर)
(नाटक की लय में विनय का पद)

२९–सुनिये नाथ, सुनिये नाथ, मोरी है मत मोरी, चाहूं कृपा। तोरी, जोरूं हाथ ॥ दीनन के दुख भंजन हार, भक्तों में रखते हो तन मन से प्यार, तुमसा तृलोकी में ना कोई हितकारी, पूरणकलाधारी, करुणावतार, वेदों ने सार पाया न पार, हार, हार, तुरत, फुरत, दुख को हरत, सुखकौ करत, जनकौ करिये प्रभु सनाथ ॥ सुनिये० ॥
यह जन पापन की है जिहाज, आपही को प्रभु है मोरी लाज, कोटिन जन्मों के मेरे कुकर्मों का लेखा किये ना बनै मेरो काज, हे महाराज, मुझको नवाज, आज, आज, ॥ (हो) आपत हरण, आपकी शरण, आयो है यह जन, मथुरा चरण नावै माथ ॥ सुनिये नाथ० ॥

(विनय का पद)

"पीर बेगानी पहचानी नहीं" इसके वज़न पर

(३०) मोसे नहीं कछु सेवा बनी काहे टेक दयाल तजो अपनी।
१–आप पतित जन पावन हौ, दीनन दुःख नसावन हौ, ।

मेरे तुम्ही मन भावन हौ, मेरो आप सिवाय न कोई धनी ॥
॥ मोसे नहीं कछु सेवा बनी ॥
२—मैं ने किरोरन पाप किये, जीवन को बहु ताप दिये, ।
अंत में आपही भांप लिये, मेरे छाई हिये बिच आसघनी ॥
॥ मोसे नहीं कछु सेवा बनी ॥
३—आपसो कोई कृपाल नहीं, दीनन को प्रतिपाल नहीं, ।
मोसम दीन तृकाल नहीं, प्रभु कैसी मिली बिध आय बनी ॥
॥ मोसे नहीं कछु सेवा बनी ॥
४—देर करोगे जो तारन में, भव रोग महा दुख टारन में ।
करूं आलस नाहिं पुकारन में, मथुरेश सुनो भारी रारठनी ॥
॥ मोसे नहीं कछु सेवा बनी ॥

॥ रागिनी सोरठ ॥

(३१) तुम बिन मेरो प्रभु कौन धनी ।
काहू से मम लाज अधम की राखत नाहि बनी ॥
१—काम क्रोध मद मोह लोभ रिपु मेरी बुद्धि हनी ।
बीती उमर वृथा भयो जीवन कीनी चूक घनी ॥
तुम बिन मेरो प्रभु कौन धनी ॥
२—महा मलीन माटी को पुतरो राखत मूंछ तनी ।
ना जानै मस्तक पर खेलत काल कराल फनी ॥
तुम बिन मेरो प्रभु कौन धनी ॥

३—अशरण शरण चरण हरि तुम्हरो महिमा वेद भनी ।
तासे विमुख रह्यो मतवारो कुमति की खान खनी ।
तुम बिन मेरो प्रभु कौन धनी ॥
४—तुमसो कोई दयाल न पायो खोजी सब अवनी ।
आयो शरण अंत प्रभु तोरी चूक्यो नाहि अनी ।
तुम बिन मेरो प्रभु कौन धनी ॥
५—पतित उधारण प्रणहि निभाओ टेक राख अपनी ।
मथुरा दास को भूल गये क्यों कहा तोरे मन में ठनी ।
तुम बिन मेरो प्रभु कौन धनी ॥

॥ मांड ॥

(छिनगारीरा ढोला हालो महलां चालोजी म्हांका राज)
इसके वज़न पर

(३२) नंदजी का दुलारा थे छौ म्हारा जीवन प्राण अधार ॥
थेछौ म्हारा जीवण प्राण अधार , अजी हो मोत्यां हाला ॥
बंसी वाला सांवलिया सरदार ॥ नंदजी का० ॥
१ (दोहा) थांकी मूरत मोहनी थे छौ टोनाबाज ।
म्हांने भुरकी गेर कर क्यों मोह्यो महाराज ।
अजी हो मोत्यां हाला० ॥
२ ,, मन म्हांके बस ना रह्यो पकड्यां सरसी हाथ ।
चरणां मांही राख ज्यो मत छिटकाज्यो नाथ ।

अजी हो मोत्यां हाला० ॥

३ ,, थे छो सांची प्रीत का गाहक श्री ब्रजराज ।
प्रीत रीत जानूं नहीं म्हारी थांने लाज ॥
अजी हो मोत्यां हाला० ॥

४ ,, माफ़करौ दिल साफ़कर सकल चूक तकसीर ।
दयाधाम निज नामकौ सफल करौ बलवीर ॥
अजी हो मोत्यां हाला० ॥

५ ,, म्हांने अति प्यारी लगै थांकी झांकी श्याम ।
झलक पलकहूकी लख्यां बणजासी सबकाम ॥
अजी हो मोत्यां हाला० ॥

६ ,, मथुरा पति पत राखज्यो म्हाकी श्रीमहाराज ।
मैं गरीब थांकी शरण गही ग़रीबन वाज ॥
अजी हो मोत्यां हाला० ॥

॥ पद ॥

(उमरावजी के वजन पर)

(३२) गोपाल प्यारा म्हांकानी थे झांको जी सरकार
गोपालजी हो सरकार ॥

१—आखडली कामन भरी ग़ज़ब भरी मुसकान ।
झेलण ने म्हे त्यार छां तीखा नैना बान ॥
नन्दलाल म्हाने तरसाओ मत बादीला सरदार ।

गोपालजी हो सरकार ॥

२—मोर मुकट थांका सीस पर सोहै कुन्डल कान ।
छैल छवीली मोहनी झांकी थांकी कान्ह ॥
व्रजवाल सारी तन मन सुं छै थां ऊपर वलिहार ।
गोपालजी हो सरकार ॥

३—चरणांरी रज आपकी नित्त चढावां सीस ।
दर्शन नित पावो करां मांगां या वकसीस ॥
कृपाल थांने सारा जानै भारी छो दातार ।
गोपालजी हो सरकार ॥

४—म्हें छां दीन मलीन जो थे छो दीन दयाल ।
मेहर नज़र सूं आपकी होस्यां तुरत निहाल ॥
रछपाल थांकी छव पर मथुरा मन दीनो छै वार ।
गोपालजी हो सरकार ॥

(पद)

(भंवर थांने गजरो लेदूंगी । इसके वज़न पर)

(३४) अरज़ मेरी सुनिये गिरधर लाल ॥
काट सकै को तुम बिन प्रभुजी महा कठिन जगजाल ।
अरज़ मेरी सुनिये गिरधर लाल ॥
(१) सेवक पर स्वामी नहिं रीझै बिना चाकरी कोय ।
होयकृपा कारणबिन तुम्हरी असनहीं कोउदयाल ॥

अरज़ मेरी सुनिये गिरधर लाल ॥

(२) भीषमजी की टेक निभाई निज प्रण दीनो छेक ।
माता की गति लही पूतना तुमसो कौन कृपाल ॥
अरज़ मेरी सुनिये गिरधर लाल ॥

(३) लख चोरासी जोन भुगत में पाई मानुष देह ।
नेहकियोनहिं प्रभुचरणनसे कीनी अमित कुचाल ॥
अरज़ मेरी सुनिये गिरधर लाल ॥

(४) यदपि छमांवर मांगन लायक मुख नहिं मेरो नाथ ।
तदपि हाथ दोऊ जोड तिहारी कृपा चहै यह बाल ॥
अरज़ मेरी सुनिये गिरधर लाल ॥

(५) श्रीमथुरेश ईस मथुराके जानत सब संसार ।
किये बिचार तजे नहिं बानिहै सरिहै कियेनिहाल ॥
अरज़ मेरी सुनिये गिरधर लाल ॥

(ठुमरी)

(कान्ह मुरली वारो नंद को लाल । इसके वज़न पर)

(३५) श्याम करुणा सिंधु सुख के धाम ।
चरणों लगाय मम दुख हरो नाथ ॥
श्याम करुणा० ॥

१ रसके सदन देहु निज दर्शन । शरम हमारी तुम्हरेही हाथ ।
श्याम करुणा० ॥

२ हमसे अधम कियेबहुपावन। बिरदनिभाओमोहि करौसनाथ ॥
श्याम करुणा० ॥
३ तुम्हरेखुगुणखुनेमनहरपत । लगन लगाई तुम्हरे ही साथ ॥
श्याम करुणा० ॥
४ मथुराकहततुम्हीहगअञ्जन। धरत तिहारे चरणों ही माथ ॥
श्याम करुणा० ॥

॥ पद राग काफी ॥

(२६) विनिती सुनिये हमारी। नाथ हम शरण तिहारी ॥
१—आप समान दयाल न कोई चौदह भवन मँझारी।
दीनन के प्रतिपाल करन कौ नाना तन प्रभु धारी।
धन्य धन जन हितकारी ॥ विनती० ॥
२—नेति नेति चहुं वेद बखानत महिमा कहत श्रुति हारी।
सो प्रभु प्रेम के वस व्रज प्रघटे निज माया बिस्तारी।
भये रस रास बिहारी ॥ बिनती० ॥
३—जोजन तुम्हरी शरण गही प्रभु भवसे लेत उबारी।
वाके हित तुम बहुत कष्ट सह करत फिरत रखवारी।
धन्य धन श्री गिरधारी ॥ बिनती० ॥
४—श्री मथुरेश कौन कारण तुम सुध नहीं लेत हमारी।
पतित जान काहे आंख चुरावत लीजै विरद बिचारी।
पतित पावन अघहारी ॥ बिनति० ॥

(पद)

(डोलेरे जोबन मदमाती गुजरिया)
(इसके वज़न पर)

(३७) चेरी हूं मोहन मेरी बेगी लो खबरिया ।
चेरी हूं मोहन तेरी० ॥

१—कामी, क्रोधी, निपट अबोधी, ।
सोधी, नहीं मैं तो धरम डगरिया ॥ चेरी० ॥

२—औगुन गारी, परम अनारी, ।
भारी धरी सिर पातक गगरिया ॥ चेरी० ॥

३—तुम्हरी कहाऊं तुम्हें लजाऊं, ।
मुखडा दिखाऊं कैसे लगत नजरिया ॥ चेरी० ॥

४—दासी तिहारी अघन की रासी ।
तुम अघनासी मथुरेश सांवरिया ॥ चेरी० ॥

(पद, ग़ज़ल)

(न छेड़ो हमैं हम सताये हुए हैं । इसके वज़न पर)

(३८) बिहारी तुम्हीं को है लज्जा हमारी ।
कहो नाथ है आपने क्या बिचारी ॥
तुम्हारा कहाके कहो किस पै जाऊं ।
सुनाऊं किसे दिल का सन्ताप भारी ॥

तुम्ही गजकी ख़ातिर गरुड छोड़ धाये ।
मेरी वेर हिम्मत कहो कैसे हारी, ॥
अजामेल गणिका विदुर और शिवरी ।
अहल्यासी पाषान हू तुमने तारी, ॥
सहस सीस अरु कर्ण वेदों ने तेरे ।
कहे मेरी खातिर हुए मौन धारी ॥
सुनोगे न मथुरेश जो मेरी विन्ती ।
हँसेंगे सभी तुमको दे दे के तारी ॥

(पद)

(परदेसी ढोला नैना लगाय दुख दे गयो)
(इसके वज़न पर)

(२९) सुन गिरवरधारी राखूं तिहारी ही मैं भावना ।
सुन गिरवरधारी० ॥

(१) तेरोहि ध्यान तिहारो ही भरोसो, ।
तोसो कृपा निधान कहीं भी नहीं पावना ॥सुन०॥
(२) तुमहो पूरण काम बिहारी, ।
दीनन के हितकारी हमें ना बिसरावना ॥सुन०॥
(३) ना बनि है मम औगुण हेरे, ।
तेरे चरित उदार दयातैं अपनावना ॥सुन०॥
(४) मथुरा के स्वामी अन्तर थामी, ।

नामी दयाल कहाय जगत ना हँसावना ॥ सुन० ॥

॥ पद ॥

(राग प्रभाती या झंझोटी)

(४०) श्री गोविन्द कृपा सिन्धु विनती सुन लीजै ॥ श्रीगो० ॥
प्रभुकी जन राखै आस, भारी अतिभवकी त्रास, ।
पापन की रास, हूं मैं दूजो ना पतीजै ॥ १ ॥ श्रीगो० ॥
आप हैं कृपा निधान, आपहि करुणा की खान, ।
मोकों प्रभु दीन जान, दया दान दीजै ॥ २ ॥ श्रीगो० ॥
तुमसो दातार और, कोई नहीं काहु ठौर, ।
तुमही लग मेरी दौर, बेगि गौर कीजै ॥ ३ ॥ श्रीगो० ॥
मथुरा पति दरस देहु, चरणन में राख लेहु ।
भव दुख हर लेहु, नाथ टहल महल दीजै ॥ ४ ॥ श्रीगो० ॥

॥ पद ॥

(घरसे यहां कौन खुदा के लिए लाया मुझको)
(इसके वजन पर)

(४१) नाथ मैं आप सिवा कहिये तो ध्याऊं किसको ।
जगके तुम नाथ हो मैं नाथ बनाऊं किसको ॥ १ ॥

तारे बेचारे महा पापी किरोरों तुमने ।
रहम दिल ऐसा कहां जाके मैं पाऊं किसको ॥ २ ॥
जिसके रूठे सभी दुश्मन हों हुए खुश सब दोस्त ।
ऐसे सरकार को तज और मनाऊं किसको ॥ ३ ॥
जिसका गुन गाके हुए मुक्त मुनी नारद से ।
छोड़ कर तुमसा गुनी और मैं गाऊं किसको ॥ ४ ॥
ईश मथुरा के हैं मशहूर ज़माने में हुजूर ।
कौन फ़रियाद सुनै और सुनाऊं किसको ॥ ५ ॥

(पद)

("अटारियोंवे गिरोरी कबूतर आधीरात" इसके वज़न पर)

४२) बिसारियो ना मोथि को मनोहर प्यारे श्याम ।
मन मोहन प्यारे आप हैं पूरण काम ॥ बिसा० ॥
त्यागो नहिं जावे छिन हू ये रस मयी धाम ।
नैनन को भावे झांकी तिहारी आभिराम ॥ बिसा० ॥
चरणन में पायो मोरे हिये ने विश्राम ।
दृढ नहचो आयो आपहि प्रभु सुख धाम ॥ बिसा० ॥
मथुरा के स्वामी आप कृपालू सरनाम ।
हे अन्तरजामी दया कोहि चाहूं मैं इनाम ॥ बिसा० ॥

(पद)

(राग आसावरी)

(४२) मेरे घर आओ सांवरे मैं पैयां पर जाऊं ।
सांवरी सूरत भोरी माधुरी मूरत तोरी ॥
कभी तो दरस देके तपन बुझावरे । मैं पैयांपर जाऊं० ॥
सोहनी सिजल बांकी मोहनी नवल झांकी ।
ग़ज़ब अदाहै जाकी तनक दिखावरे ॥ मैं पैयांपर जाऊं० ॥
देखके मुकुट सोभा मन में भयो है लोभा ।
मेहर नज़र कर प्यारे मुसिकावरे ॥ मैं पैयांपर जाऊं० ॥
मथुरा दोऊ कर जोरें शरण भई है तोरे ।
सरै नाहि सुख मोरे प्रीत को निभावरे ॥ मैं पैयांपर जाऊं ॥

रागनी सोरठ ।

("अब हर भूले नाहि बनै," इसके वज़न पर)

(४३) तुमसो कृपालु प्रभु नहिं कोउ आन ।
दीन मलीन हीन मति हू को नाथ करत कल्यान ।
तुमसो कृपालु प्रभु० ॥
१—विप्र सुदामा बिन कछु सामां दुखिया दीन महान ।
हरलीनो दुख वाको छिन में कीनो आप समान ॥
तुमसो कृपालु प्रभु० ॥

२—छतियन ज़हर लगाय पूतना लगी करावन पान ।
जननी की गति ताकौ दीनी धन धन कृपा निधान ॥
तुमसो कृपालु प्रभु० ॥
३—भीष्म भक्त की राखी प्रतिज्ञा निज प्रणदियो भुलान ।
अर्जुन की रक्षा के कारण आप वने रथवान ॥
तुमसो कृपालु प्रभु० ॥
४—रुचि रुचि खायो साग विदुर को तज योधन पकवान ।
धन्य धन्य मथुरेश दया निधि कहांलों करूं बखान ॥
तुमसो कृपालु प्रभु० ॥

(पद रागिनी विहाग)

(४५) कौन चूक वनि आई नाथ मोसे कौन चूक० ।
काम वली मोहि आन सताई ध्यान समाधि डिगाइ ॥
नाथ मोसे कौन चूक० ॥
१—धृति मोहित भई सुमति हु चूप भई नष्ट भई चतुराई ।
चर अरु अचर काम वस सगरे देह सुरत बिसराइ ॥
नाथ मोसे कौन चूक० ॥
२—या अवसर में तुम बिन दूजो होवै कोन सहाई ।
मदन मान मर्दन जगवन्दन श्री पति कुंवर कन्हाई ॥
नाथ मोसे कौन चूक० ॥
३—मोहि भरोसो प्रभु चरणन को दूजी ठौर न पाई ।

श्री मथुरेश काम विष हर के प्रेम सुधा देउ प्याई ॥
नाथ मोसे कौन चूक० ॥

(विन्ती नवल किशोर मेरी मान मान मान)
(इसके वज़न पर)

(४६) मोहन विनय हमारी लौ मान-मान-मान ।
निस दिन मुझै तुम्हारा है ध्यान-ध्यान-ध्यान ॥
मोहन विनय हमारी० ॥
मैं हूं अधम अनारी तुम हो दया निधान ।
हरगिज़ न चूक मेरी धरो कान-कान-कान ॥
मोहन विनय हमारी० ॥
औगुन भरा जो मैं हूं तुमहो कृपा की खान ।
बख़शिश की अपने भूलो ना बान-बान-बान ॥
मोहन विनय हमारी० ॥
दातार तुम हो पूरे मथुरेश मेहरबान ।
मांगू नज़र करम का मैं दान-दान-दान ॥
मोहन विनय हमारी० ॥

(मन मोह लिया श्याम ने बन्सी को बजाके)
(इसके वज़न पर)

(४७) दिल खुश करो गोपाल मेरा छब को दिखाके ।

हा छव को०—सुनलो अरज़ हमारी ज़रा पास बुलाके ।
दिल खुश करौ गोपाल० ॥

बांकी तुम्हारी झांकी के हम हैं जी तलबगार ।
खुश होंगे हम सनम तुम्हें छाती से लगाके ॥
दिल खुश करौ गोपाल० ॥

मुझे संगदिल समझ के भी तुम टल नहीं सकते ।
पावन करी अहिल्या पद रज को छुआ के ॥
दिल खुश करौ गोपाल० ॥

मथुरेश मेरे दिल से कहीं जानहीं सकते ।
टुक देखलो संभल के ज़रा ज़ोर अज़मा के ॥
दिल खुश करौ गोपाल० ॥

("आज मेरे मन मोहन पिया आये" इसके वज़न पर)

(४८) श्याम मोरे तुम प्रीतम मन भाये । रहूंगी चेरी तिहारि ।
श्याम मोरे तुम प्रीतम० ॥

दीन मलीन जान न विसारो । दीन दयाल कहाये ॥ श्याम०
आपके गुन सुन रीझी पिया मैं । तुम्हरे हाथ बिकाये ॥ श्याम०
भोरी बाबरी जैसी हूं तुम्हरी । सरिहै नाथ निभाये ॥ श्याम०
श्रीमथुरेश शरण आगतकौ । नाहि बने छिटकाये ॥ श्याम०

(झोटा दीजो संभार हां मेरी सारी न उघरे)
(इसके वज़न पर)

(४९) मोहन करोजी ना गरूर हां जरा मुखडा दिखादो ॥
१—जादू भरी तोरी प्यारी प्यारी चितवन, ।
जोबन के मद में चूर हां जरा नैना मिलादो ॥ मोहन०
२—होठों की लाली हिये बिचसाली, ।
अमृत जहां भरपूर हांजरा रस तो चखादो ॥ मोहन०
३—नाचूंगी तुम संग रंग राचूंगी, ।
चेरीहूं तेरी हजूर हां मोय साडी रंगादो ॥ मोहन०
४—प्रेम सुधा रस की हूं मैं प्यासी, ।
तिरषा करो मेरी दूर हां मुझे प्याला पिलादो ॥ मोहन०
५—नामी दया निध मथुरा के स्वामी, ।
करिये कृपा जरूर हांप्यारे-दुखड़ा मिटादो ॥ मोहन०

(ठुमरी)

("सैयां तोरे पैयां लागूं वैयां नमरोर" इसके वज़न पर)

(५०) दैया मोरी नैयारे कन्हैया मझधार ॥
पायन परत हूं बिनती करतहूं चाहत निबेडा मेरा बेडाकरो पार ।
दैया मोरी नैयारे कन्हैया मझधार ॥
मैं अपराधी कोई जुगत नसाधी मोसे अधमनकीतोहिलाजगुसैयां ।
दैया मोरी नैयारे कन्हैया मझधार ॥

मथुरा पुकारै विरद लजाय तेरो तारण तरण मेरी विपत निवार।
दैया मोरी नैयारे कन्हैया मझधार ॥

[ग़ज़ल]

("महाराज को हक रखे शादकाम" इसके वज़न पर)

(५१) सुनो श्याम सुंदर मेरी एक बात ।
तुम्हारी रची है ये सब कायनात ॥
जिसे चाहो तुम पल में करदो निहाल ।
गदा शाह बन जावे शह तंग हाल ॥
तेरी ज़ात का है जहां में ज़हूर ।
झलकता है हरजा तेरा पाक नूर ॥
गुनाहों की बखशिश है तेरा ही काम ।
इसी से दयालू है मशहूर नाम ॥
शरण तेरी आया हूं सब छोड कर ।
बखेडों से दुनिया के मुंह मोड कर ॥
न तुझसा दयालू है दातार और ।
न मुझसा ही तालिब गुनहगार और ॥
येही आरज़ू है मेरी दम बदम ।
इधर भी ज़रा हो निगाह करम ॥
तेरी बांकी झांकी निहारा करूं ।
अदाओं पै मन अपना वारा करूं ॥

जो मंजूर हो दीजीये यह इनाम ।
नहीं छोड़दो अपना मथुरेश नाम ॥

(सिरदारजी बोली प्यारी लागे मोरी ज्यान)
(इसके वज़न पर)

(५२) ब्रजराज थारी झांकी प्यारी लागे मोरी जान ॥
मोर मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल ।
नंदलाल थारी सूरत पर बलिहारी मोरी जान ॥ ब्रज० ॥
बंसी की टेर सुनाय के मोह लई ब्रजनार ।
भरतार थारी करनी सब से न्यारी मोरी जान ॥ ब्रज० ॥
शरणा गत की लाज छै थांने श्री महाराज ।
सिरताज थारी भारी छै सिरदारी मोरी जान ॥ ब्रज० ॥
मांगां छां सब छाड के दरशन नित्य हमेश ।
मथुरेश थारी चितवन कामन गारी मोरी ज़ान ॥ ब्रज० ॥

(कहीं डार आई बिछुवा ना जानरे)
(इसके वज़न पर)

(५३) कीजै पार मेरी नैया माधौ हरी ॥
भव सागर में डूबी भव सागर में डूबी निकसायले प्यारे
निकसायले नैया माधौ हरी ॥ कीजै० ॥
(अं०) माया को जल या में दम दम बढते है । कर्मों के

झोके प्यारे कर्मों के झोके मिटवायदे प्यारे मिटवायदे।
नैया माधौ हरी० ॥ कीजै पार मेरी० ॥ १
तेरे विना नहीं दूजा सहारा। मथुरा के स्वामी प्यारे म-
थुरा के स्वामि उबरायदे प्यारे उबरायदे। नैया माधो० ॥ २

(नाटक की ठुमरी)

(५४) वांके सांवरिया कन्हैया मोको तारना रे ॥ मोको० ॥
(अं.) सोवत जागत तेरो जस गावत। ध्यान लगावत अति-
सुख पावत। छिन छिन कठिन तेरे विन जीवन धारनारे ॥
वांके सांवरिया कन्हैया मोको तारना रे ॥
राखे आस, मथुरा दास, किंकरखास, देखू रास का विला-
स, चरणों पास, पाऊं बास, । धरि, धरि, हरि, मोहिं, रस
भरि, नज़र निहारनारे ॥ वांके संवरिया कन्हैया मोको० ॥

(अरजी खिदमत में श्री मथुरेश जी के उन्ही की शिकायत में)

(५५) मथुरेश तुम्हारी खिदमत में हूं तुम पर अरज़ी लाया ॥
मन इन्द्री प्राण हमारे। सब हैं आधीन तुम्हारे।
तुम सबहिं नचावन हारे। ऐसा वेदों ने बतलाया।
मथुरेश तुम्हारी खिदमत० ॥
जो हो क़ाबू से वाहिर। वो बे गुनाह है ज़ाहिर।

क्यों आपने होकर गाहिर । मुझको अपराधी ठैराया ।
मथुरेश तुम्हारी ख़िदमत० ॥

जो शरण आपकी आवे । पापों से छुट्टी पावै ।
और बे खटके हो जावे । आपही गीता में फ़रमाया ।
मथुरेश तुम्हारी ख़िदमत० ॥

मैं आपका दास कहाऊं । किसी औरके पास न जाऊं ।
फिरभी क्यों धक्के खाऊं । है ये क्या अन्धेर मचाया ।
मथुरेश तुम्हारी ख़िदमत० ॥

क़ानून वेद और गीता । है साथ नहीं हूं रीता ।
इनसाफ़ से मैं हूं जीता । दिलको आपने क्यों भरमाया ।
मथुरेश तुम्हारी ख़िदमत० ॥

वो अजामेल सा पापी । तुमने तारा था सन्तापी ।
लीजै नज़ीर की भी कापी । अब क्या आपको है मनभाया ।
मथुरेश तुम्हारी ख़िदमत० ॥

गर है इन्साफ़ पसन्दी । कानून की भी पावन्दी ।
काटो जन्म मरण की बंदी । गोरख धन्दा क्या फैलाया ।
मथुरेश तुम्हारी ख़िदमत० ॥

(राग खम्माच ताल चौताला)

(५६) माधौ तेरे प्रण को निहारत ।
बीती है उमरिया मेरी धरत ध्यान ॥ माधौ० ॥

पापिन के पाप ताप हेर निवारत ।
कबहु न जावै तोरी दया की बान ॥ माधौ० ॥
मथुरा को दास आस तेरी ही राखत ।
तुमरो कहाऊं जाऊं किधर कान ॥ माधौ० ॥
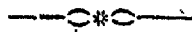
("फूल हज़ारी लेलो" इसके वज़न पर)

(५७) घनश्याम मुरारी बोलौ, घनश्याम मुरारी बोलौ ।
अजी बोलौ बोलौ२, घनश्याम मुरारी बोलौ ॥
भूले मुझे किस कारण, तुमहो जगत निस्तारण ।
इतना तो मनमें तोलौ, घनश्याम मुरारी बोलौ ॥
मथुरेश दया अब कीजे, जल्दी से दर्शन दीजे ।
दिलकी जी घुंडीखोलौ, घनश्याम मुरारी बोलौ ॥

(राग भैरवी ठुमरी)

("निज़ारा मैं तो मार आइरे" इसके वज़न पर)

(५८) बिहारी तो पै वारी जाऊंरे, तोरी नज़र मारी चोट ।
बिहारी तोपै वारी जाऊंरे ॥
दुखी सारी नार अनारी, क्याहै किसी की दवियारी ।
बिहारी तोपै वारी जाऊंरे ॥
इश्क खुमारी ज़ानन हारी, लेवेंगी न्याय बिचारी ।

बिहारी तोपै वारी जाऊंरे ॥
सुन मथुरेश हूं चेरी तिहारी, कीजे न हियेसे न्यारी ।
बिहारी तोपै वारी जाऊंरे ॥

(ठुमरी)

("लंगरवा छोडो बैयां मोरि" इसके वज़न पर)

(५९) मोहनवा चाहूं छैयां तोरि ॥

चरणन लागी तोरे श्याम सैयां चन्द्र बदन पै मगन चकोरि ।
मोहनवा चाहूं छैयां तोरि ॥
तिहारीहंसन पर वारूं ये जोबनवा जान शरन मोहि भोरीरेभोरी ।
मोहनवा चाहूं छैयां तोरि ॥
मथुरा के मनको करिये भवनवा राख नज़र मम औरी रे ओरी ।
मोहनवा चाहूं छैयां तोरि ॥

॥ "पद" राग भैरवी ॥

(६०) श्यामा श्याम कीजे हो कृपा ॥
लीजे बुला चरणों से लगा । चेरो हूं हरि तेरो हूं ॥
मैं जत मत समुझत ना । एजी मानो कहिना सेवक का ॥
प्यारे बेगहि करिये दया । मथुरा मांगे भव से मुझको ॥

मथुरा मांगे भव से मुझको तारौ दीना नाथ ॥
श्यामा श्याम कीजै हो कृपा ॥

(नाटक की चीज़)

(चलो गुइयां ठुमक चल जैयां सजन घर आवैंगे)

(इसके वज़न पर)

(६१) मोरी बैयां पकर हरि सैयां जगत दुख भारी है ।
भारी है हग जल जारी है ॥ मोरी० ॥
जन तुम्हरी शरण तुम दुख के हरण ॥ जगत दुख० ॥
आजारे प्यारे छव दिखा । गिरवर धारी विपन बिहारी ॥
सुघर मुरारी मथुरा वारी ॥ जगत दुख भारी है ॥

अरे हांरे दिल जानी रे तू सोवे मत वारारे अपने धाम
को पिया ले चली हूं अरे तख्त हवा से उतारारे

(इसके वज़न पर)

(६२) अरे कान्हा ब्रज वासीरे हूं तोपे बलिहारीरे ।
अपने भाग को पिया मैं सराहूं । अरे चेरी कहाऊं तिहारीरे ॥
अरे कान्हा ब्रज बासीरे० ॥
छव ये मोहनी हिये में बसीरे । अरे तोरी नज़रिया ने मारीरे ॥
अरे कान्हा ब्रज बासीरे० ॥

सुरत सांवरी जियाको लुभावै । अरे झांकी तिहारी है प्यारीरे ॥
अरे कान्हा ब्रज वासीरे० ॥
मथुरा आपसे यहि दान मांगै । अरे कीजै चरणसे न न्यारीरे ॥
अरे कान्हा ब्रज वासीरे० ॥

(मूंगे की चाल में)

राधे थाने आज सांवरियो बुलावै पधारो वृषभान की लली अरे हां० ।
(इसके वज़न पर)

(६३) खिलारी ज़रा झांकतो सही । अरे हां खिलारी० ॥
राखूं भारी आस तिहारी बिहारी ॥ खिलारी० ॥

१—मृदु मुसिकान ठगोरी मोपे डारी ।
देहकी सुध ना रही ॥ अरे हा खि० ॥
२—ललित तृभंग अङ्ग रुचि उपमा ।
मुखसे न जात कही ॥ अरे हां खि० ॥
३—बिन दर्शन छिन जुग सम बीते ।
आसा है लाग रही ॥ अरे हां खि० ॥
४—कृपा बूंद याचैं चित चातक ।
और की चाह नहीं ॥ अरे हां खि० ॥
५—श्री मथुरेश आप भक्तन की ।
तुरत ही बांह गही ॥ अरे हां खि० ॥

(अष्ट पदी)

(श्री कृष्ण महाराज की स्तुति में)

(६४) श्रीकृष्णचन्द्र मुकुन्द गिरिधर सुघर सुन्दर लोचनम् ।
राधिका वर चरण वन्दौं तृविध ताप विमोचनम् ॥
१—वेद नहिं जेह भेद पावत रटत शेप महेश्वरम् ।
भजत नारद नित्य शारद अलख अज परमेश्वरम् ॥
२—दीन वन्धु दयाल करुणा सिन्धु विपत विदारणम् ।
सकल कलिमलहरण स्वामी निकिल दुःख निवारणम् ॥
३—गहन भव दुख दहन हरिजन मनहरण तृभुवन पतिम् ।
विमल जस रससदन कोमल तन विराजित शुभमतिम् ॥
४—पच रहे सब निगम आगम पायो ओर न छोर है ।
सोई ब्रह्मनंद किशोर तन धर गोपिकन चित चोर है ॥
५—जोग जप तप जतन तैं जो मनन में आवे नहीं ।
सोई भक्ति वस जसुधा के हाथन उदरदाम बंधावहीं ॥
६—अति कुटिल गणिका अजामिल नीच शवरी जातकी ।
हरे उनके पाप सगरे तेरे बहुतक पातकी ॥
७—छमहु मम अपराध गिरधर हरौ व्याध तृताप की ।
अभय दायक चरण सुन प्रभु शरण लीनी आपकी ॥
८—बाल कृष्ण कृपाल सनमुख करण, दुख हर लीजिये ।
भोलानाथ के इष्ट मथुरा पति चरण रति दीजिये ॥

(नाटक की चीज़)

(तेरी छल बल है न्यारी तोरी कल बल है न्यारी)

(इसके वज़न पर)

(६५) हारे पच पच के सारे ज्ञानी ध्यानी बेचारे
तोरी महिमा न जानी गुशयां राम ॥ हारे० ॥
राघौ मैं हूं जी हैरान बिनै क्या सुनाऊं । अजी अपने
गुणों को निहारो मेहरबान ॥ अजी अपने गुणोंको० ॥
राखो माथे पै हाथ मैं हूं क़दमों के साथ तुमहो दीनोंके
नाथ येही चाह चाह चाह, चाह चाह चाह, चाह चाह
चाह, हारे पच पच सारे ज्ञानी ध्यानी बेचारे० ॥
दया मया के निधान जहां मैं कहाओ । कीजै न देरी
हुआ मैं परेशान । भाषै मथुरा को दास भारी भव की
है त्रास स्वामी कीजे निकास कहूं त्राह त्राह त्राह, त्राह
त्राह त्राह, त्राह त्राह त्राह, हारे पच पच के सारे० ॥

(पद)

(श्री रामचन्द्र जी के विनय में)

(६६) जग बन्दन कौशल्या नन्दन दुख भंजन अवतारीजी ।
पाप निरासन ताप विनाशन सुनलो विनय हमारीजी ॥ज०॥
(अं.) खोट पोट धरके सिर ऊपर लोट पोट विषयन मांही ।

मोटी ओट तकी चरणन की तुम क्यों सुरत बिसाराजी ।
जग वन्दन कौशल्या नन्दन० ॥ १
अजा मेल गणिका पुन शबरी नीच व्याध तुम तारेजी
धीर गंभीर वीरता तजकर डरपत हमरी बारीजी
जग वन्दन कौशल्या नन्दन० ॥ २
अधम उधारण कष्ट निवारण पद तुम धारण कीनोजी ।
मथुरा के प्रभू निस्तारण में मौन कौन विध धारोजी ।
जग वन्दन कौशल्या नन्दन० ॥ ३

("ग़ज़ल" अंग्रेज़ी भाषा में)

(अब तो सुध ले मेरी बंसी के बजाने वाले)
(इसके वज़न पर)

(६७) कम हियर माइ डियर गिरधर डीले नैवर ।
आइ विल कीप विदिन हार्ट दी ब्यूटी ऐवर ॥ कम० ॥
लवस् यू एव्री वन वन्स् हु सौ योर ब्यूटी ।
चैरिशैज़ योर इमेज हिछ इज़ वेरी क्लेवर ॥ कम० ॥
वन्स लुक ऐट मी विद योर गिरेशस आइज़ ।
आइ डू नाट मेरिट दिस आनर दो ऐवर ॥ कम० ॥
कीप मी सेल्फ़ डियर ऐवर इन यौर माइंड ।
प्लीज़ मथुरेश हियर माइ दिस अम्बिल प्रेअर॥ कम० ॥

(श्री प्रियाजी से विनय)

(कृपा कटाक्ष स्तोत्र के वजन पर)

६८ महा प्रमोद कारिणी प्रिय सुरूप धारिणि ।
प्रसन्न भा प्रकाशिनी प्रपन्न ताप नाशिनी ।
सुनौहमरि स्वामिनी प्रभू कि प्यारी भामिनी ।
लगाई क्यों अबेर है कृपा में काहे देर है ॥ लगाई० ॥

थुथू करे यदी मुझे न होगा लाज क्या तुझे ।
कपूत हुं सपूत हुं कहाऊं तेरो पूत हुं ।
क्षमाकि तोरी बानहै तुही दया निधान है ॥ लगाई० ॥

राखूं हुं आस मात की हुं यद्यपी मैं पातकी ।
कमी न काहु बातकी तिहारी ओट आतकी ।
रही न कोई कामना न और की है भावना ॥लगाई०॥

प्रधान तेरो इष्ट है तुम्हारी सारी सृष्ट है ।
तिहारी जापै दृष्ट है वोही सदैव हृष्ट है ।
समस्त शोकभञ्जनी प्रशस्तश्याम रंजिनी ॥लगाई०॥

स्वाधीन जुक्ति जोगकी न चाह मुक्ति भोगकी ।
विथा बढी वियोगकी दवादे माई रोगकी ।
रहूं मैं भिन्न कबतलक कठिनहै एकभी पलक ॥लगाई०॥

दरिद्र दीन दास को नहीं उदास कीजिये ।
निकुंज द्वार आस पास ही निवास दीजिये ।
अजानहीं खवास बन काजन को ठान लीजिये ॥लगाई०॥

(पद)

(श्री व्रज किशोरी जी की सेवा में फ़रियाद)

(६९)सकुचत नाहि बनत हूं याचक कीरत राज दुलारी को ।
गिरिधर नैन चकोर चन्द्र मुख जिस बरसाने वारी को ।
सकुचत नाहि बनत हूं० ॥
शिव विरंचि जाके करत निहोरे सनकादिक बिनवत करजोरे ।
सो हरि बंध्यो प्रेम के डोरे अनुचर भानु कुमारी को ।
सकुचत नाहि बनत हूं० ॥ १
मैं मति मंद किये बहु धन्दे फँस्यो मोह माया के फन्दे ।
जितने कर्म किये सब गन्दे चेरो दुनियां दारी को ।
सकुचत नाहिं बनत हूं ॥ २
विनती मैं नाना विध ठानी नन्द नदन प्रभु एक न मानी ।
आयो द्वार तेरे महारानी शरणागत पिया प्यारी को ।
सकुचत नाहि बनत हूं ॥ ३
शरणागत वत्सल तुम दोऊ दयावन्त तुम सो नहिं कोऊ ।
मेटत होन हार हो सोऊ दुख कलंक संसारी को ।
सकुचत नाहिं बनत हूं० ॥ ४
होकर शुद्ध विमल जस गाऊं युगल चरण में नेह बढाऊं ।
सरकारी किंकर पद पाऊं मथुरा पति बनवारी को ।
सकुचत नहि बनत हूं० ॥ ५

(पद)

(तथा श्री प्रियाजी से विनय का)

(७०) शरण तेरी आयो मैं ब्रजनारी ।
प्यारे नंद दुलारे मोसैं निठुराई ठानी ॥
हार्यो कर२ विन्ती बाकी दीन मुझै झांकी ।
बांकी चलन चातुरी ताकी थके सुमतज्ञानी ।
शरण तेरी आयो मैं० ॥
तेरेहाथ बिकानो रसिया मुनि मन नाहि बसिया ।
सारे कहैं बडो यह जसिया हमैं परेशानी ।
शरण तेरी आयो मैं० ॥
जन्म जन्म के कर्म घनेरे रहे मनहि घेरे ।
सुख दुख दिखरावत बहुतेरे मिटत न हैरानी ।
शरण तेरी आयो मैं० ॥
तनक आपकी म्हेरं नज़रिया को चाहुं ज़रिया ।
करैं कृपा मथुरेश संवरिया वर दीजै दानी ।
शरण तेरी आयो मैं० ॥

॥ ठुमरी भैरवी ॥

(७१) छबि तोरी राधेरी एरी हांरी गिरधर वर मनहर लीनो
नाम धाम तेरो ही रटत ॥ छबि तोरी० ॥

निगम अगम जाको भेद नहिं पावै रीझ रीझ सोहु तोय ध्यावै ॥ छवि तोरी राधेरी एरी० ॥
मथुरा चहत तोरी कृपा सिरनावै गौर श्याम जोरी मोकौं भावै ॥ छवि तोरी राधेरी एरी० ॥

॥ नाटक की चाल पर ॥

(७२) धन राधे रानी कान्हा तिहारे बस में भयो ।
ब्रह्म महेश शेश शारद हू पचपच ध्यान लगाय लजाय दुख है सह्यो ॥ धन राधे रानी० ॥
धीर समीर तीर जमुना के नच नच ताहि रिझाय, मनाय सुख दे रह्यो ॥ धन राधे रानी० ॥
है मथुरेश प्रेम को भूको, रुच रुच गोरस खाय, जताय शुक ये कह्यो ॥ धन राधे० ॥

॥ ठुमरी सारंग का दादरा ॥

(७३) तूही वसीला तेरो ही ज़रिया । तेरे सिवा नहीं कोई वसीला, कोई वसीला ना कोई ज़रिया ॥ तूही० ॥
सुनलो मोरी भानु किशोरी चाहत हूं तोरी मेहर नज़रिया तूही वसीला तेरो ही ज़रिया ॥

सुर मुनि जाके दर्स कौ तरसैं सो परसे तेरे चरण सांवरिया ।
॥ तूही वसीला तेरो ही ज़रिया ॥
पतित की पावनि हरिमन भावनि, अतिही सुहावनि तोरी-
नगरिया ॥ तूही वसीला० ॥
प्यास तैं विकल कठिन है पल पल, कृपा के जल भरौ
मनकी गगरिया ॥ तूही वसी० ॥
सुन गज गामिन हरि की भामिन, मथुरा की स्वामिन-
लीजे खबरिया ॥ तूही वसी० ॥

[राग सिन्धु भैरवी]

(७४) अब इत चितवौ स्वामिन मोरी । स्वामिन मोरी वृष
भानु किशोरी ॥ अब इत० ॥
कृपा करे बिन नाहिं सरैगो । यद्यपि जन यह अघन भरोरी ।
अब इत चितवौ स्वामिन० ॥
हमसे अधम किरोरन तारे । मेरी बेर क्यों मौन धरोरी ।
अब इत चितवौ स्वामिन० ॥
अति उदार सिरकार तिहारी । अब क्यों मन कौ कृपन करौरी ।
अब इत चितवौ स्वामिन० ॥
अविचल टहल महल की मांगू । दीजे यह भिक्षा भर झोरी ।
अब इत चितवौ स्वामिन० ॥
मन नहिं टरै युगल चरणन से । मेहर नज़र राखौ मम ओरी ।

अब इत चितवौ स्वामिन० ॥
मथुरा दीन मीन सम आतुर। कृपा सलिल कौं तरस रह्योरी।
अब इत चितवौ स्वामिन० ॥

[पद]

(७५) आके तुम्हरे अब द्वार किशोरी कहौ कहां जाऊं ॥
१—प्रघट आप करुणा की सागर निपट तिहारे बस नट नागर ।
तुम समरथ मैं अनरथ पर्वत ठौर कहां पाऊं ॥ आके० ॥
२—असंख्यत उत्पात हमारे लिखे न जात मात बिधि हारे ।
अति लजात औरनको कैसे मुखडा दिखलाऊं ॥ आके० ॥
३—जकडे रहे पाप की डोरन वे जन तारे आप किरोरन ।
भव सन्ताप नसावन को मैं किसको सिरनाऊं ॥ आके० ॥
४—वंसी धुनि सुनिबे को तरसूं होय मिलाप कौन विध हरसूं ।
तज कर नेह श्याम गिरधर सूं कौन देव ध्याऊं ॥ आके० ॥
५—सांचो प्रेम लेश नहि धार्यो यातें मोहिं मथुरेश बिसार्यो ।
जननी तुम बिन नाहिं सहारो गुण हमेश गाऊं ॥ आके० ॥

॥ तथा पद ॥

(७६) लीजै खबर हमारी बरसाने वारी हो ॥
मैं हुं शरण तिहारी तन मन तोपे वारी ।
तोरी महिमा है अपारीरी किशोरी प्यारी हो ॥ लीजै० ॥

हरि तेरो गुण गावै, तेरो अनुग कहावै ।
तोरे संग संग धावै, तोपै बलिहारी हो ॥ लीजै० ॥
लागी जगत की व्याधी, कछु जुगत न साधी ।
मैं हुं भारी अपराधी, अतिहि अनारी हो ॥ लीजै० ॥
जप तप नहि कीनों, कछु सुजस न लीनों ।
तो में चित्त नहिं दीनों, यातैं हों दुखारी हो ॥ लीजै ॥
करुणाकी निधि तोको, पाय नार्‍यो सब धोको ।
भयो धीरज है मोको, आसा लागी भारी हो ॥ लीजै ॥
मथुरा की सुध लीजै, भैया विलम न कीजै ।
बेग दर्शन दीजै, मौन काहे धारी हो ॥

(स्तुति श्रीराधे महारानी की पणिहारी की चाल में)

(७७) चंद्र बदनि मृगलोचनी सुकुमारी हो ।
हरि की प्राण अधार राधाजी ॥ १ ॥
पाप ताप भय मोचनी हितकारी हो ।
करुणा दया अपार राधाजी ॥ २ ॥
रूप अनूप उजागरी पिय प्यारी हो ।
यह जन शरण तिहार राधाजी ॥ ३ ॥
कीनो नहीं अनुराग री दुख भारी हो ।
मैया न मोहि बिसार राधाजी ॥ ४ ॥
नन्द नंदन मन रंजिनी ताप वारी हो ।
छिन छिन कृष्ण मुरार राधाजी ॥ ५ ॥

सकल अमङ्गल भञ्जिनी बलिहारी हो ।
मथुरा की ओर निहार राधाजी ॥ ६ ॥

नैना लागेरी उनसे आली (इसके वज़न पर)

(७८) पैयां परूंरी हरि से मिलादे पैयां परूंरी ।
चितहि चुराके भयेरी निचीते, अबला मैं कैसे धीर धरूंरी ।
पैयां परूंरी हरि से मिलादे० ॥ १ ॥
मोहन प्यारे मद मत वारे, टारी मोहि कहा जतन करूंरी ।
पैयां परूंरी हरि से मिलादे० ॥ २ ॥
कृपा निधान कान्ह अपने हैं, सेवा से कबहु नाहि टारूंरी ।
पैयां परूंरी हरि से मिलादे० ॥ ३ ॥
तनमन प्राणवार गिरिधर पर, व्है निचिन्त मैं सबसे लरूंरी ।
पैयां परूंरी हरि से मिलादे० ॥ ४ ॥
दे ठोकर यदि टार्यो चाहै, एक बार तोहु झगर अरूंरी ।
पैयां परूंरी हरि से मिलादे० ॥ ५ ॥
बैयां पकर मनैहौं सैयां, पैयां पर तन मन वार मरूंरी ।
पैयां परूंरी हरि से मिलादे० ॥ ६ ॥
श्रीमथुरेश चरण वर नौका, पाय तुरत भवसिन्धु तरूंरी ।
पैयां परूंरी हरि से मिलादे० ॥ ७ ॥

॥ पद ॥

(७९) हरि प्यारी श्रीभानु दुलारी, विनय हमारी चित धरिये ।
श्रीगिरधारी नवल बिहारी, सगं थाय कृपा करिये ।
हरि प्यारी श्री भानु दुलारी० ॥
हौं कपूत पर पूत तिहारो, मम करतूत न उरधारो ।
जननी अपनी ओर निहारो, दया मया कर निस्तरिये ।
हरि प्यारी श्री भान दुलारी० ॥
कैसो हु नीच अधम कहलावे, चरण शरण तुमरी आवै ।
सो निज मन इच्छा फल पावे, अब निज प्रणसे ना टरिये ।
हरि प्यारी श्री भानु दुलारी० ॥
विरह विथा सहिजाय न जनसे, लगन लगी नटरै मनसे ।
दर्शन दीजै काहु जतन से, आपहि महिमा विस्तरिये ।
हरि प्यारी श्री भानु दुलारी० ॥
श्रीमथुरेश निकुञ्ज बिहारी, तिनकी आप अधिक प्यारी ।
देहु दरस दोउ जन हितकारी, वेगहि मन भटकन हरिये ।
हरि प्यारी श्री भानु दुलारी० ॥

(पद कसूंबी की लय पर)

(८०) सुनिये किशोरी किशोरी किशोरी गोरी राधे ।
मेरी तुमही को लाज ॥ सुनिये० ॥

(अ.) तुमतौ दयालू दयालू दयालू महारानी ।
तोरे वस ब्रजराज ॥ सुनिये० ॥ १ ॥
अवगुन घनेरे घनेरे घनेरे मैया मेरे ।
मैं हूं पाप की जिहाज ॥ सुनिये० ॥ २ ॥
जननी उबारौ उबारौ उबारौ आलस मत धारौ ।
प्यारी सारौ मेरो काज ॥ सुनिये० ॥ ३ ॥
सुतकी कपूती कपूती कपूती लख माता ।
नाहि नेहा देवे त्याग ॥ सुनिये० ॥ ४ ॥
व्रज में बसाओ बसाओ न मैया तरसाओ ।
दरसाओ जी समाज ॥ सुनिये० ॥ ५ ॥
याचूं युगल को युगल को दरस रति राचूं ।
नहि याचूं गज बाज ॥ सुनिये० ॥ ६ ॥
मथुरा निहोरे निहोरे संतत कर जोरे ।
छोरै नाहि पद आज ॥ सुनिये० ॥ ७ ॥

॥ गज़ल राग सोहनी ॥

(श्री किशोरी से विनय)

(८१) राधे प्यारी दुख है भारी मैं अनारी क्या कहूं ।
सुध बिसारी क्यों हमारी हूं दुखारी क्या कहूं ॥
प्रेम की दातार हो करुणा की तुम भन्डार हो ।
नाहि पाया पार महिमा का तुम्हारी क्या कहूं ॥

सुंदरी हूरो परी तुमसी तृलोकी में नहीं ।
खुद हरी करता तुम्हारी ताबेदारी क्या कहूं ॥
दीन बन्धु और करुणा सिन्धु माता आप हो ।
दया अमृत बिन्दुका मैं हूं भिकारी क्या कहूं ॥
लेश उत्तम कर्म का कुछ भी न मुझ में धर्मका ।
मर्म जाना प्रेम उससे भी हूं आरी क्या कहूं ॥
देखिये मेरी कपूती की तरफ़ हरगिज न मात ।
प्रण को देखो अपने श्री मथुरेश प्यारी क्या कहूं ॥

(कहीं डार आई बिछवा ना जानुरे)

(८२) वस नाहिं मेरो मनवा ना मानेरी ।
येतौ भारी चपल समुझाय दे, श्यामा समुझाय दे,
मनवा ना मानेरी ॥
राधे नवेली अलबेली वो झांकी, ये तौ देख्यो चाहत,
दिखलादे ॥ मनवा ना० ॥ १ ॥
बांके बिहारी बनवारी दरस को, प्यासो मरत पिलवायदे,
रस पिलवायदे ॥ मनावा ना० ॥ २ ॥
तोसी कृपालु मैया चौदह भवनमें, ढूंडी न पावे अपना
यले ॥ मनवा ना० ॥ ३ ॥
तोरी कृपा बिन कुञ्ज महल मे, जाने न पावै कोई जाने,
न पावै बुलवायले ॥ मनवा ना० ॥४॥
मथुरा को स्वामी तेरी आज्ञा ना टारे, मेरी अरज वाकों

मेरी अरज सुनवायदं ॥ मनवा ना० ॥ ५ ॥

(सवैया) गाने की चीज़

(८३) श्रीनन्दनन्दनआनन्द कन्द सुनो विन्ती जगदीश हमारी ।
दीन के नाथ अधीन के साथ नवीन नहीं बखशीश तिहारी ॥
लाखन के अपराध क्षमे प्रण राखन को जगमें अवहारी ॥
पाप विशेष मेरे मथुरेश निहार के क्यों निज टेक बिसारी ॥

(हरि रङ्ग राती के वज़न पर)

(८४) हो त्रिभुवन स्वामी अन्तर जामी नाथ दयालु कहावतहैं ॥
फँसा हुवाहै अविद्या के जाल में प्राणी ।
सही न जाती है आवा गमन की हैरानी ।
तुम्हारी भक्ति नकी की ये सख्त नादानी ।
कपूत बन करी करतूत अपनी मनमानी ।
हो फाटतछाती दुख के सँगाती कोई नज़र न आवतहैं ॥
पतित अनेक तुम्हीं ने जगत में तारे हैं ।
महा कुकर्मी अजामेल से उबारे हैं ।
विचारी द्रोपदी के कष्ट सब निवारे हैं ।
किरोडों भक्तों के संकट तुम्हीने टारे हैं ।
हो महिमा तुम्हारी कैसे वरणूं वेदहु पार नपावत हैं ॥
हमारे पापों का हेनाथ कुछ शुमार नहीं ।
कुकर्म इतने किये जिनका पारावार नहीं ।
कियाहै ख्वाबमें भी धर्म का विचार नहीं ।
करेंगे न्याव तो हरगिज़ मेरा उद्धार नहीं ।
हो मथुरा तिहारेविरद भरोसे होनिश्चिन्त गुणगावत हैं